Roll No. : .....

Total No. of Questions : **11**] [Total No. of Printed Pages : **4**

BEED–145

B.A. B.Ed. (Ist Year) Examination, 2023

SANSKRIT

Paper - II (CC-1)

(भारतीय संस्कृति के तत्त्व, पद्य साहित्य, अनुवाद एवं व्याकरण)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **60***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 8 = 16)**

नोट :– सभी **आठ** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 4 × 5 = 20)**

नोट :– सभी **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **4** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 8 × 3 = 24)**

नोट :– पाँच में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–अ

1. अधोलिखितेषु **अष्ट**प्रश्नानामुत्तराणि देयानि–

   (i) षोडशसंस्काराणां नामानि लिखत।

   (ii) ब्राह्मणस्य उपनयनसंस्कारः कस्मिन् वर्षे भवति ?

(iii) दिलीपेन कस्याः धेनोः सेवा कृता ?

(iv) सिंह-दिलीपसंवादः रघुवंशस्य कस्मिन् सर्गे अस्ति ?

(v) अधोलिखितवाक्ययोः संस्कृतानुवादः करणीयः—

(क) वह गुरु को नमस्कार करता है।

(ख) रमेश सिंह से डरता है।

(vi) 'आदिरन्त्येन सहेता' सूत्रस्य व्याख्या विधेया।

(vii) 'गुरु' इति शब्दस्य रूपाणि लिखत।

(viii) गम् धातोः लृट्लकारे रूपाणि लिखत।

खण्ड–ब

नोट :– सर्वेषां प्रश्नानां उत्तराणि लेखनीयानि—

2. निम्नलिखितेषु केयोश्चिद् द्वयोः टिप्पण्यौ लिखत—

(क) चतुर्णाम् आश्रमाणां परिचयः

(ख) पञ्चमहायज्ञाः

(ग) ऋणत्रयम्

(घ) विवाहसंस्कारः

3. सप्रसंगमनुवादो विधेयः—

अमुं पुरः पश्यसि देवदारुं पुत्रीकृतोऽसौ वृषभध्वजेन।

यो हेमकुम्भस्तननिःसृतानां स्कन्दस्य मातुः पयसां रसज्ञः॥

अथवा

स त्वं मदीयेन शरीरवृत्तिं

देहेन निर्वर्तयितुं प्रसीद।

दिनावसानोत्सुकबालवत्सा

विसृज्यतां धेनुरियं महर्षेः॥

4. अधोलिखितगद्यांशं पठित्वा केषाञ्चित् **चतुर्णां** प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषायां लिखत—

मानवजीवनस्य साफल्यं त्यागेनैव भवितुमर्हति, न तु भोगेन। पाश्चात्त्या संस्कृतिर्हि सर्वथा उपभोगसंस्कृतिः, सर्वान् भोगमेव शिक्षयति। भारतीया संस्कृतिस्तु सर्वथा आध्यात्मिकी, भोगस्थाने योगमेव शिक्षयति। पाश्चात्या सभ्यता खलु परेषां भागम् अपहर्तुमपि संकोचं न अनुभवति। भारतीयसभ्यता पुनः परेषां उपकाराय निजस्वार्थान् त्यक्तुं प्रेरयति। त्यागो हि अस्या एको महामन्त्रः येन विश्वकल्याणं भवितुमर्हति। भारतीया संस्कृति परेषां कल्याणं मनुते, परेषां कार्यसिद्धये स्वकीयस्वार्थत्यागः करणीय इति उपदिशति इयमेव त्यागभावना गीतायामपि प्रकटिता। वेदेषु बहुकालं पूर्वमेव त्यागस्य महिमा उद्घोषित—तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।

(क) भारतीया संस्कृति किं शिक्षयति ?

(ख) मानवजीवनस्य साफल्यं केन भवति ?

(ग) भारतीयसभ्यता किं कर्तुं प्रेरयति ?

(घ) भारतीयसंस्कृति किम् उपदिशति ?

(ङ) 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' इति कुत्र लिखितमस्ति ?

(च) गीतायां का भावना प्रकटिता ?

5. अधोलिखितपदयोः रूपसिद्धिः कार्या—

(i) दैत्यारिः **अथवा** उपेन्द्रः।

(ii) रामश्चिनोति **अथवा** तल्लयः।

6. अधोलिखितेषु **द्वयोः** शब्दयोः रूपाणि लिखत—

(i) सखि

(ii) रमा

(iii) वारि

(iv) जगत्

खण्ड–स

नोट :– अधोलिखितेषु केषञ्चित् **त्रयाणां** प्रश्नानामुत्तराणि लिखत–

7. भारतीयसंस्कृतेः विशेषताः प्रतिपादनीया।

8. रघुवंशस्य द्वितीयसर्गस्य सारं लिखत।

9. निम्नलिखित श्लोकस्य सप्रसंगं व्याख्या कार्या–

एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं

नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च।

अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्

विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्॥

10. भारतस्य प्राचीनाश्रमव्यवस्थां प्रतिपादयत।

11. अधोलिखित वाक्यानां संस्कृतानुवादः करणीयः–

(i) स्वामी सेवक पर क्रोध करता है।

(ii) मुनि वन में रहता है।

(iii) सत्य से ही धर्म की रक्षा होती है।

(iv) वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।

(v) राम ने रावण को मारा।

(vi) आम सब फलों का राजा है।

(vii) वह आँख से काणा है।

(viii) कृष्ण माता से छिपता है।